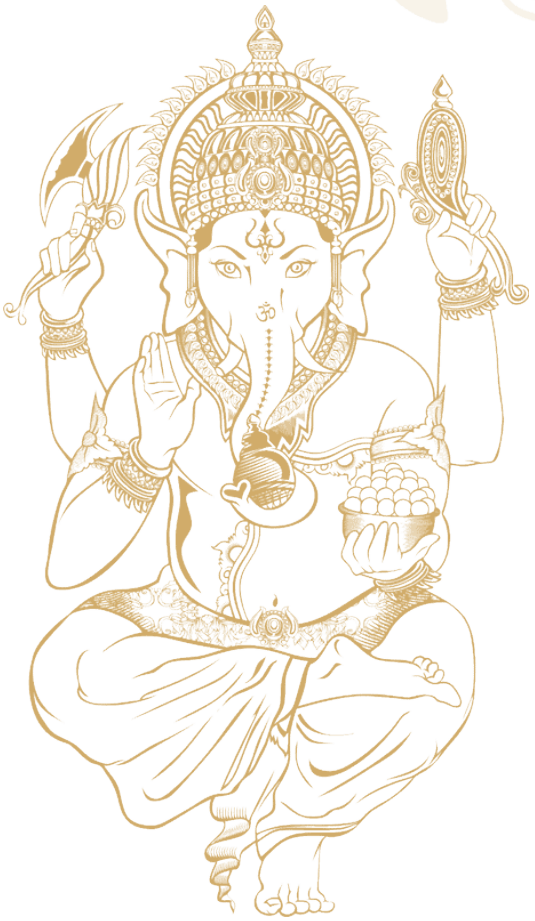

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
1-02/09/1998	जन्म तिथि	16/04/2002
मंगल-बुधवार	दिन	मंगलवार
घंटे 03:07:00	जन्म समय	21:36:00 घंटे
घटी 52:55:35	जन्म समय(घटी)	39:17:27 घटी
India	देश	India
Meerut	स्थान	Meerut
29:00:00 उत्तर	अक्षांश	29:00:00 उत्तर
77:42:00 पूर्व	रेखांश	77:42:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:12	स्थानिक संस्कार	-00:19:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:56:45	सूर्योदय	05:53:01
18:40:08	सूर्यास्त	18:45:38
23:50:11	चित्रपक्षीय अयनांश	23:53:02

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
शुक्र 15वर्ष 4मा 7दि	08:09:25	कर्क	लग्न	वृश्चि	09:44:56	चन्द्र 5वर्ष 5मा 15दि
चन्द्र	15:24:18	सिंह	सूर्य	मेष	02:36:12	राहु
10/01/2020	16:25:48	धनु	चंद्र	वृष	16:03:11	02/10/2014
09/01/2030	13:54:54	कर्क	मंगल	वृष	08:07:11	01/10/2032
चन्द्र 09/11/2020	27:21:29	कर्क	बुध	मेष	12:49:40	राहु 14/06/2017
मंगल 10/06/2021	01:03:59	मीन व	गुरु	मिथु	14:57:30	गुरु 07/11/2019
राहु 10/12/2022	00:06:23	सिंह	शुक्र	मेष	25:01:53	शनि 13/09/2022
गुरु 10/04/2024	09:32:14	मेष व	शनि	वृष	18:02:15	बुध 02/04/2025
शनि 09/11/2025	07:36:53	सिंह	राहु व	वृष	25:03:34	केतु 20/04/2026
बुध 11/04/2027	07:36:53	कुंभ	केतु व	वृश्चि	25:03:34	शुक्र 20/04/2029
केतु 10/11/2027	15:49:04	मक व	हर्ष	कुंभ	04:03:42	सूर्य 15/03/2030
शुक्र 10/07/2029	05:57:20	मक व	नेप	मक	16:54:03	चन्द्र 14/09/2031
सूर्य 09/01/2030	11:32:13	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	23:32:53	मंगल 01/10/2032

लग्न-चलित

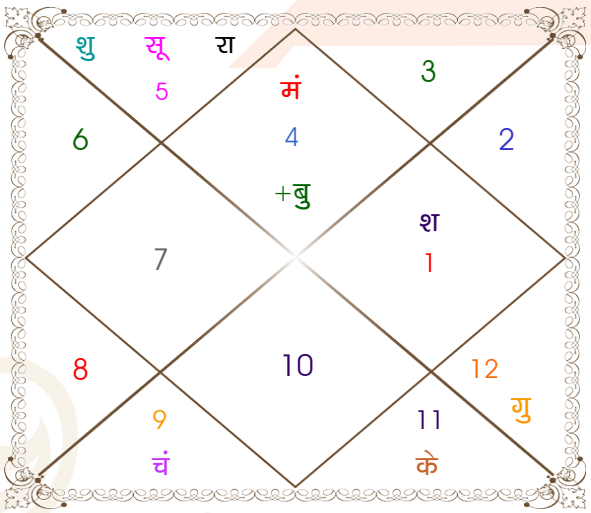

लग्न-चलित

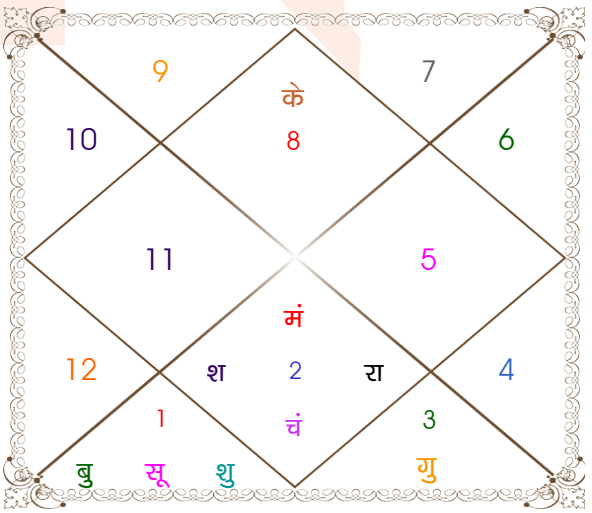

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शुक्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	वृष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.00		

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

Mr. का वर्ग मूषक है तथा Ms. का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Mr. कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Ms. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Ms. कि कुण्डली में सप्तम् भाव में वृष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु Ms. कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।